हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय

सत्रांत परीक्षा,जून 2022

कार्यक्रम : एम.ए (हिंदी) **सत्र : 2021-22**

सत्र : चतुर्थ **समयावधि : 3 घंटे**

पाठ्यक्रम शीर्षक : हिंदी आलोचना **अधिकतम अंक :70**

पाठ्यक्रम कोड : SHSS HND 14 13 C 4105

निर्देश :

1. प्रश्न सं. 1 के कुल सात भाग हैं | जिनमें से किन्हीं चार के उत्तर देनें होंगे | प्रत्येक भाग के 3.5 अंक निर्धारित है|

2. प्रश्न सं. दो से पांच के कुल तीन भाग हैं | जिनमें से किन्हीं दो के उत्तर देने होंगे | | प्रत्येक भाग के 7 अंक निर्धारित है |

प्रश्न 1. निम्नलिखित में से किन्हीं चार पर संक्षिप्त टिप्पणी कीजिए | (4X3.5=14)

(a) आलोचना मूल्य
(b) मार्क्सवादी आलोचना
(c) आलोचना की दूसरी परम्परा
(d) पल्लव की भूमिका
(e) रामविलास शर्मा और हिंदी नवजागरण
(f) तार सप्तक
(g) शुक्ल पूर्व आलोचना

प्रश्न 2. किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए (2X7=14)

(a) हिंदी आलोचना के विकास का आलोचनात्मक मूल्यांकन कीजिए |

(b) शुक्लयुगीन आलोचना की प्रमुख विशेषताओं का विश्लेषण कीजिए |

(c) मार्क्सवादी आलोचना के प्रतिमानों पर विस्तृत नोट लिखिए |

प्रश्न 3 . किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए | (2X7=14)

(a) रामचंद्र शुक्ल की इतिहास दृष्टि पर विस्तार से पर चर्चा कीजिए |

(b) नंददुलारे वाजपेयी के आलोचना मूल्यों का मूल्यांकन कीजिए |

(c) हजारीप्रसाद दिवेदी की आलोचना दृष्टि में परम्परा की भूमिका पर विस्तृत नोट लिखिए |

प्रश्न 4. किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए | (2X7=14)

a) हिंदी में मार्क्सवादी आलोचना के स्वरूप को स्पष्ट कीजिए |
b) मार्क्सवादी आलोचक के रूप में रामविलास शर्मा के अवदान का मूल्यांकन कीजिए |
c) नामवर सिंह के आलोचनात्मक मूल्यों का विश्लेषण कीजिए |

प्रश्न 5 . किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए | (2X7=14)

(a) प्रसाद की छायावाद सम्बन्धी आलोचना दृष्टि पर विस्तार से चर्चा कीजिए |

(b) विजयदेव नारायण साही की आलोचना दृष्टि पर विस्तृत नोट लिखिए |

(c) मुक्तिबोध के आलोचना सिद्धांतों पर विस्तार से चर्चा कीजिए |

हरियाणा केन्द्रीय विश्वविद्यालय

सत्रांत परीक्षा, जून-2022

कार्यक्रम : एम.ए. (हिंदी)
सेमेस्टर : IV
पाठ्यक्रम का नाम : भक्तिकाव्य
कोर्स कोड : SHSS HND 1 4 12 C 5005

सत्र : 2021-22
अवधि : 3 घंटे
पूर्णांक : 70

निर्देश :

1. प्रश्न संख्या एक के सात उपखंड हैं। परीक्षार्थी को किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर देनें हैं। प्रत्येक उपखंड 3.5 अंकों का है।
2. प्रश्न संख्या दो से पांच तक में तीन उपखंड हैं, जिनमें से परीक्षार्थी को प्रत्येक प्रश्न में किन्हीं दो उपखंडों का उत्तर देना है। प्रत्येक उपखंड सात अंकों का है।

प्रश्न संख्या -1 (4 X 3.5=14)

अ) रहस्यवाद का अभिप्राय स्पष्ट कीजिए।
ब) कबीर के समाज-दर्शन पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।
स) जायसी का साहित्यिक परिचय लिखिए।
द) मीरां का साहित्यिक परिचय लिखिए।
य) अष्टछाप का आशय स्पष्ट कीजिए।
र) 'तुलसी की भक्ति' को स्पष्ट कीजिए।
ल) 'अँसुवन जल सींची-सींची प्रेम-बेल बोई' का भावार्थ संक्षेप में लिखिए।

प्रश्न संख्या-2 (2X7=14)

अ) कबीर की भक्ति-भावना पर प्रकाश डालिए।
ब) 'संतकाव्य का वैचारिक आधार' विषय पर सारगर्भित निबंध लिखिए।
स) सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिए-

माया महा ठगिनी हम जानी।
तिरगुन फाँसि लिये कर डोलै, बोलै मधुरी बानी।
केसव के कमला होइ बैठी, सिव के भवन भवानी।
पंडा के मूरत होइ बैठी तीरथहू में पानी।
जोगी के जोगिन होइ बैठी, काहू के कौड़ी कानी।
भक्तन के भक्तिन होइ बैठी, ब्रह्मा के ब्रह्मानी।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, यह सब अकथ कहानी॥

प्रश्न संख्या-3 (2X7=14)

अ) सूफ़ीकाव्य की विशेषताओं की विवेचना कीजिए।
ब) जायसी के काव्य में अभिव्यक्त प्रेम-भावना और लोकतत्त्व को सोदाहरण रूपायित कीजिए।
स) सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिए-

भा भादों दूभर अति भारी। कैसे भरौं रैनि अँधियारी॥
मंदिर सून पिउ अनतै बसा। सेज नागिनी फिरि फिरि डसा॥

रही अकेलि गहे एक पाटी। नैन पसारि मरौं हिय फाटी ॥
चमक बीजु, घन गरजि तरासा। बिरह काल होइ जीउ गरासा ॥
बरसै मघा झकोरि झकोरि। मोर दुइ नैन चुवैं जस ओरी ॥
धनि सूखै भरे भादौं माहाँ। अबहुँ न आएन्हि सीचेन्हि नाहाँ ॥

प्रश्न संख्या-4 (2X7=14)

अ) मीरां के काव्य की प्रमुख विशेषताओं का सोदाहरण उल्लेख कीजिए।
ब) सूर के काव्य में निरूपित शृंगार और वात्सल्य का उद्घाटन कीजिए।
स) सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिए-

लरिकाई को प्रेम, कहौ अलि, कैसे करिकै छूटत।
कहा कहौं ब्रजनाथ-चरित अब अंतरगति यों लूटत ॥
चंचल चाल मनोहर चितवनि, वह मुसुकानि मंद धुन गावत।
नटवर भेस नंदनंदन को वह विनोद गृह वन तें आवत ॥
चरन कमल की सपथ करति हौं यह संदेस मोहि विष सम लागत।
सूरदास मोहि निमिष न बिसरत मोहत मूरति सोवत जागत ॥

प्रश्न संख्या-5 (2x7=14)

अ) 'तुलसी का काव्य लोकमंगल पर अवलंबित है', इस कथन की समीक्षा कीजिए।
ब) भक्तिकाव्य में तुलसीदास के महत्त्व को रेखांकित कीजिए।
स) सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिए-

ऐसी मूढ़ता या मनकी।
परिहरि राम-भगति-सुरसरिता, आस करत ओसकन की ॥
धूम-समू- निरखि-चातक ज्यों, तृषित जानि मति घनकी।
नहिं तहँ सीतलता न बारि, पुनि हानि होत लोचन की ॥
ज्यों गज काँच बिलोकि सेन जड़ छाँह आपने तनकी।
टूटत अति आतुर अहार बस, छति बिसारि आनन की ॥

हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय

सत्रांत परीक्षा,जून 2022

कार्यक्रम : एम.ए (हिंदी) **सत्र : 2021-22**

सत्र : चतुर्थ **समयावधि : 3 घंटे**

पाठ्यक्रम शीर्षक : हिंदी आलोचना **अधिकतम अंक :70**

पाठ्यक्रम कोड : SHSS HND 14 13 C 4105

निर्देश :

1. प्रश्न सं. 1 के कुल सात भाग हैं | जिनमें से किन्हीं चार के उत्तर देनें होंगे | प्रत्येक भाग के 3.5 अंक निर्धारित है|

2. प्रश्न सं. दो से पांच के कुल तीन भाग हैं | जिनमें से किन्हीं दो के उत्तर देने होंगे | | प्रत्येक भाग के 7 अंक निर्धारित है |

प्रश्न 1. निम्नलिखित में से किन्हीं चार पर संक्षिप्त टिप्पणी कीजिए | (4X3.5=14)

(a) आलोचना मूल्य
(b) मार्क्सवादी आलोचना
(c) आलोचना की दूसरी परम्परा
(d) पल्लव की भूमिका
(e) रामविलास शर्मा और हिंदी नवजागरण
(f) तार सप्तक
(g) शुक्ल पूर्व आलोचना

प्रश्न 2. किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए (2X7=14)

(a) हिंदी आलोचना के विकास का आलोचनात्मक मूल्यांकन कीजिए |

(b) शुक्लयुगीन आलोचना की प्रमुख विशेषताओं का विश्लेषण कीजिए |

(c) मार्क्सवादी आलोचना के प्रतिमानों पर विस्तृत नोट लिखिए |

प्रश्न 3 . किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए | (2X7=14)

(a) रामचंद्र शुक्ल की इतिहास दृष्टि पर विस्तार से पर चर्चा कीजिए |

(b) नंददुलारे वाजपेयी के आलोचना मूल्यों का मूल्यांकन कीजिए |

(c) हजारीप्रसाद दिवेदी की आलोचना दृष्टि में परम्परा की भूमिका पर विस्तृत नोट लिखिए |

प्रश्न 4. किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए | (2X7=14)

a) हिंदी में मार्क्सवादी आलोचना के स्वरूप को स्पष्ट कीजिए |
b) मार्क्सवादी आलोचक के रूप में रामविलास शर्मा के अवदान का मूल्यांकन कीजिए |
c) नामवर सिंह के आलोचनात्मक मूल्यों का विश्लेषण कीजिए |

प्रश्न 5 . किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए | (2X7=14)

(a) प्रसाद की छायावाद सम्बन्धी आलोचना दृष्टि पर विस्तार से चर्चा कीजिए |

(b) विजयदेव नारायण साही की आलोचना दृष्टि पर विस्तृत नोट लिखिए |

(c) मुक्तिबोध के आलोचना सिद्धांतों पर विस्तार से चर्चा कीजिए |

हरियाणा केन्द्रीय विश्वविद्यालय

सत्रांत परीक्षा, जून-2022

कार्यक्रम : एम.ए. (हिंदी)
सेमेस्टर : IV
पाठ्यक्रम का नाम : भक्तिकाव्य
कोर्स कोड : SHSS HND 1 4 12 C 5005

सत्र : 2021-22
अवधि : 3 घंटे
पूर्णांक : 70

निर्देश :

1. प्रश्न संख्या एक के सात उपखंड हैं। परीक्षार्थी को किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर देनें हैं। प्रत्येक उपखंड 3.5 अंकों का है।
2. प्रश्न संख्या दो से पांच तक में तीन उपखंड हैं, जिनमें से परीक्षार्थी को प्रत्येक प्रश्न में किन्हीं दो उपखंडों का उत्तर देना है। प्रत्येक उपखंड सात अंकों का है।

प्रश्न संख्या -1 (4 X 3.5=14)

अ) रहस्यवाद का अभिप्राय स्पष्ट कीजिए।
ब) कबीर के समाज-दर्शन पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।
स) जायसी का साहित्यिक परिचय लिखिए।
द) मीरां का साहित्यिक परिचय लिखिए।
य) अष्टछाप का आशय स्पष्ट कीजिए।
र) 'तुलसी की भक्ति' को स्पष्ट कीजिए।
ल) 'अँसुवन जल सींची-सींची प्रेम-बेल बोई' का भावार्थ संक्षेप में लिखिए।

प्रश्न संख्या-2 (2X7=14)

अ) कबीर की भक्ति-भावना पर प्रकाश डालिए।
ब) 'संतकाव्य का वैचारिक आधार' विषय पर सारगर्भित निबंध लिखिए।
स) सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिए-

माया महा ठगिनी हम जानी।
तिरगुन फाँसि लिये कर डोलै, बोलै मधुरी बानी।
केसव के कमला होइ बैठी, सिव के भवन भवानी।
पंडा के मूरत होइ बैठी तीरथहू में पानी।
जोगी के जोगिन होइ बैठी, काहू के कौड़ी कानी।
भक्तन के भक्तिन होइ बैठी, ब्रह्मा के ब्रह्मानी।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, यह सब अकथ कहानी॥

प्रश्न संख्या-3 (2X7=14)

अ) सूफ़ीकाव्य की विशेषताओं की विवेचना कीजिए।
ब) जायसी के काव्य में अभिव्यक्त प्रेम-भावना और लोकतत्त्व को सोदाहरण रूपायित कीजिए।
स) सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिए-

भा भादों दूभर अति भारी। कैसे भरौं रैनि अँधियारी॥
मंदिर सून पिउ अनतै बसा। सेज नागिनी फिरि फिरि डसा॥

रही अकेलि गहे एक पाटी। नैन पसारि मरौं हिय फाटी॥
चमक बीजु, घन गरजि तरासा। बिरह काल होइ जीउ गरासा॥
बरसै मघा झकोरि झकोरि। मोर दुइ नैन चुवैं जस ओरी॥
धनि सूखै भरे भादौं माहाँ। अबहुँ न आएन्हि सीचेन्हि नाहाँ॥

प्रश्न संख्या-4 (2X7=14)

अ) मीरां के काव्य की प्रमुख विशेषताओं का सोदाहरण उल्लेख कीजिए।
ब) सूर के काव्य में निरूपित शृंगार और वात्सल्य का उद्घाटन कीजिए।
स) सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिए-

लरिकाई को प्रेम, कहौ अलि, कैसे करिकै छूटत।
कहा कहौं ब्रजनाथ-चरित अब अंतरगति यों लूटत॥
चंचल चाल मनोहर चितवनि, वह मुसुकानि मंद धुन गावत।
नटवर भेस नंदनंदन को वह विनोद गृह वन तें आवत॥
चरन कमल की सपथ करति हौं यह संदेस मोहि विष सम लागत।
सूरदास मोहि निमिष न बिसरत मोहत मूरति सोवत जागत॥

प्रश्न संख्या-5 (2x7=14)

अ) 'तुलसी का काव्य लोकमंगल पर अवलंबित है', इस कथन की समीक्षा कीजिए।
ब) भक्तिकाव्य में तुलसीदास के महत्त्व को रेखांकित कीजिए।
स) सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिए-

ऐसी मूढ़ता या मनकी।
परिहरि राम-भगति-सुरसरिता, आस करत ओसकन की॥
धूम-समू- निरखि-चातक ज्यों, तृषित जानि मति घनकी।
नहिं तहँ सीतलता न बारि, पुनि हानि होत लोचन की॥
ज्यों गज काँच बिलोकि सेन जड़ छाँह आपने तनकी।
टूटत अति आतुर अहार बस, छति बिसारि आनन की॥